प्रवाहमयी सजीव एवं सरल है।

(4) कुम्भनदास :-> कुम्भनदास जैसे महान भक्त इस समय में कम होते। ये शूद्र के थे और पूर्ण ... थे। निस्पृही ... और

त्यागवादी भक्त थे ... उन्हें फतेहपुर सीकरी बुलाया गया वहाँ से पैदल ही गये और श्री नाथजी का दर्शन न कर सकने के कारण व्याकुल होकर तुरंत लौट आये ... रह गये

संतन को कहा सीकरी सो काम।
आवत जात पनहियां टूटी बिसरि गयो हरि नाम।
जिनको मुख देखे दुख उपजत तिनको करनी परी सलाम।
कुम्भनदास लाला गिरिधर बिनु और सबै बेकाम।।

(5) कृष्णदास :-> कृष्णदास अधिकारी शूद्र थे किन्तु अपनी योग्यता के बल पर श्री नाथजी के मन्दिर के अधिकारी नियुक्त हुए थे। कृष्णदास की भ्रमरगीत, प्रेमतत्व निरूपण, जुगलमान चरित्र, भक्तमाल की टीका आदि अनेक रचनाएँ कही जाती हैं किन्तु इनमें से रचनाएँ अप्रामाणिक सिद्ध होती हैं। इनके पदों का सम्बन्ध श्री भगवान की दैनिक सेवाओं वार्षिक त्योहारों एवं उनकी विविध लीलाओं से है। कृष्णदास की भक्ति में माधुर्य भाव को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ है इनके पदों की भाषा शुद्ध ब्रज भाषा है।

(6) गोविन्द स्वामी :-> इनका जन्म सनाढ्य ब्राह्मण वंश में हुआ था किन्तु ये वृन्दावन में रहने लगे थे। इनके मनोहर गान की ख्याति ऐसी थी कि स्वयं तानसेन इनके गीत सुनने के लिए उपस्थित हुए थे गोसाईं विट्ठलनाथ जी के सम्पर्क में आने के बाद ये भगवान की सगुण लीलाओं के पद रचने लगे इनकी कोई बड़ी रचना प्राप्त नहीं हुई है केवल फुटकल पद ही प्राप्त होते हैं।

(7) छीतस्वामी :-> छीतस्वामी मथुरा के सम्पन्न पण्डा थे महाराज बीरबल इनके यजमान थे शुरू में अक्खड़ और उदण्ड थे पर गोसाईं जी की सेवा में आने के बाद विनम्र और मृदुल स्वभाव के भक्त हो गये इनकी कोई पुस्तक नहीं मिली है फुटकल पद ही प्राप्त हुए हैं।

(8) चतुर्भुजदास :- ये अष्टछाप के ही प्रसिद्ध कवि कुम्भनदास के सबसे छोटे पुत्र थे इनका कोई स्वतंत्र ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है स्फुट पदों को ही चतुर्भुज कीर्तन संग्रह कीर्तनावली और दानलीला शीर्षक से प्रकाशित किया गया है। इनकी रचना में शृंगार की छाप है। कृष्ण जन्म से लेकर गोपी विरह तक ब्रजलीला गान उन्होंने किया है।

अष्टछाप के कवि भक्त और कवि ही कवि थे सिद्धान्तवादी आचार्य नहीं थे ये आठों कवि एक साथ ही भक्त कवि और गायक इन तीनों रूपों में हमारे सामने आते हैं। वे उच्च कोटि के भक्त और कवि होने के साथ साथ एक उत्कृष्ट गायक भी थे काव्य और संगीत के व्यापक समन्वय द्वारा अष्टछाप के कवि पुष्टिमार्गीय भक्ति को अधिक व्यापक और लोकप्रिय

समर्थ हुए हैं। अष्टछाप के कवियों के पदों में रीतिकाव्य की सम्पूर्ण विशेषताएँ उपलब्ध होती हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भक्तिकालीन कृष्ण काव्य के विकास में इन अष्टछाप के कवियों का योग प्रशंसनीय है

The end